63. Mahatma Gandhi And Liberalization, ... / Dr. Pradeep Shelke I 280
64. Mahatma Gandhi – Concept Of Gram Swaraj / Dr. Prafull Raut I 283
65. Gandhi And Economics / Prof.Prashant R.Meher I 287
66. Ademocratic Decentralisation .../ Prof.P .M. Shahapurkar I 290
67. Mahatma Gandhi – Gram Swaraj / Prof. R. B. Pawar I 299
68. Mahatma Gandhi... / Shinde S.Y., Darade G.S. I 302
69. Mahatma Gandhi's Concept ... / Dr. Sudam Laxmankumar I 305
70. Relevance Of Economic Ideas... /Dr. Raskar B.R, Dr Talatkar S.B.I309
71. Revisiting Mahatma Gandhi... / Dr. Sandeep Jagdale I 315
72. The Economic Thoughts And Ideas .../ Unwane S. A. I 320
73. Thoughts Of Mahatma Gandhi / Dr. Savita Sukte, Dr R.J. Sawant I325
74. Mahatma Gandhi: Voice Of Democracy / Dr. Shaikh M A Raheman I 327
75. Mahatma Gandhi's Contribution ... / S. B. Lomate, S. S. Bhosle I330
76. Mahatma Gandhi And Democratic State / S. B. Ashtikarl 336
77. Raja Rao's Kanthpura: / Shelke Geetanjali Anantrao I 340
78. Views Of Gandhiji On Ethics ..../ Prof.Shinde Ashok Vaijanath I 343
79. Mahatma Gandhi Philosophy And Education Policy / Shinde Dinesh Subhash, Shinde Nilesh Subhash I 348
80. Education For 21st Century : ... / Smita Basole & Sunita Bhosle I 353
81. महात्मा गांधी और विश्व शांती / डॉ. जितेन्द्रकुमार एम. चौधरी | 357
82. Significance Of Mahatma Gandhi's Methodology Of Swaraj In 21 St Century / Googuewai Thorashy I 360
83. M.K. Gandhi's Satyagraha & Non. Violence / Phar Suksan I 365
84. Relevance Of Mahatma Gandhi's Thoughts ... / S.K.Selsurekar I 368
85. Effects Of Globalization ... / Milind Suryawanshi I 370
86. Relevance Of Mahatma Gandhi's Thoughts / P. D. Hudekar I 374
87. Mahatma Gandhi And Gram Swarajya / B.S.Waghmare I 376
88. Mahatma Gandhi: Great Thoughts About Mathematics / Bele C D I 379
89. Mahatma Gandhi And Globalization / Sayyed Gajala I 382
90. Gandhiji's Idea On Globalization / Namratat Pawar & Geeta Kadam I 386
91. Gandhiji And Feminism / Dr.Sunita M.Watore, Rohini R. Raut I 389
92. Gandhian View Of Environment/ Sanjay Sawate I 393
93. Political Thoughts Of Mahatma Gandhi / Shrad S. Pawarl 395

1.
महात्मा गांधी जी के भाषा विषयक विचार

डॉ. अमोल पालकर
सहयोगी, प्राध्यापक, हिंदी विभाग, बलभीम कॉलेज, बीड

गांधी जी आधुनिक भारत के युगपुरूष थे | उनका व्यक्तित्व बहु आयामी था | चिरंतन,चिंतन, कार्य के प्रति लगन और कार्य तत्परता उनके व्यक्तित्व के विशेष थे | भारत के नव निर्माण की चिंता उन्हें हमेशा लगी हरती थी इसी कारण भारत के विकास हेतु वे लगभग वे सभी विषयों पर चिंतन और विस्तार से लेखन करते रहे | जो राह उन्हें उपयुक्त लगती थी उसे वे नि:संकोच अपनाते थे | सत्य के साधक के रूप में वे आगे बढते रहते थे | बहुमत किस पक्ष में है और सफलता की संभावना संबंधी चिंता उन्हें रास्ते से नहीं हटा सकती थी | स्वाधीनता आंदोलन में उन्होंने जिन महत्वपूर्ण विषयों को स्पर्श किया उनमें विदेशी शासन को दूर करना भले ही उनका प्रमुख उद्देश्य रहा हो लेकिन उसके साथ-साथ कई आंतरिक मुद्दों को भी स्पर्श किया और गंभीर चिंतन किया है | इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण चिंतन भारत की भाषा एवं राष्ट्रभाषा संबंधी दिखाई देता है |

उन्होंने अपने विचारों को अभिव्यक्ति देने हेतु 1908 में 'हिंद स्वराज' पुस्तक लिखा | इसमें उनके राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चिंतन को विस्तार से देखा जा सकता है | यहीं पर उनका भाषा विषयक दृष्टिकोण एवं चिंतन भी सामने आता है | वे लिखते हैं "हर पढ़े लिखे हिंदुस्तानी को अपनी भाषा का हिंदू को संस्कृत का, मुसलमान को अरबी का, पारसी को पर्शियन का और सबको हिंदी का ज्ञान होना चाहिए | कुछ हिंदुओं को अरबी और कुछ मुसलमानों और पारसियों को संस्कृत सीखनी चाहिए, उसे उर्दू या नागरी में लिखने की छूट रहनी चाहिए | हिंदू और मुसलमानों के विचारों को ठीक रखने के लिए बहुतेरे हिंदुस्तानियों को दोनों लिपियों को जानना जरूरी है | ऐसा होने पर हम अपने आपस के व्यवहार में अंग्रेजी को निकाल बाहर कर सकेंगे "[1] अर्थात् गांधी जी तीन बातों की आवश्यकता मानते थे उनमें पहली हर भारतवासी मातृभाषा के साथ जरूर हिंदी भाषा सीखे | दूसरी देश के लोगों को अन्य भाषा का भी ज्ञान होना आवश्यक है | मुसलमानों और पारसियों के लिए संस्कृत की जानकारी आवश्यक है तो उत्तर भारतीय लोगों को दक्षिण भारतीय भाषाओं की जानकारी जरूरी है | जहाँ पर लिपि का प्रश्न है वहाँ पर उर्दू विचार परंपरा विकसित होगी |

गांधी जी भारतीय लोगों को एक से अधिक भाषा सीखने पर बल देते रहे | लिपि में भी नागरी और उर्दू दोनों के प्रचलन की छूट की अपेक्षा रखते थे | इसके